

रविवार 6 जुलाई, 2025

विषय — ईश्वर

स्वर्ण पाठः निर्गमन 33 : 14

"मैं तेरे संग चलूंगा, और तुझे विश्राम दूंगा।"

उत्तरदायी अध्ययनः कुलुस्सियों 1 : 3, 10-13, 16, 17, 19

- ³ अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात् परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।
- ¹⁰ ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।
- ¹¹ और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।
- ¹² और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों।
- ¹³ उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।
- ¹⁶ क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।
- ¹⁷ और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।
- ¹⁹ क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 6 : 4, 5

- ⁴ हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।

- ⁵ तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।

2. 2 इतिहास 7 : 14

- ¹⁴ तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरे, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।

3. न्यायियों 6 : 6, 11 (गिदोन)-13 (से 1st ?), 14, 23 (से :)

- ⁶ और मिद्यानियों के कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़ गए; तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई दी॥
¹¹ फिर यहोवा का दूत आकर उस बांजवृझ के तले बैठ गया, जो ओप्रा में अबीएजेरी योआश का था, और उसका पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुण्ड में गेहूं इसलिये झाड़ रहा था कि उसे मिद्यानियों से छिपा रखे।
¹² उसको यहोवा के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है।
¹³ गिदोन ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, बिनती सुन, यदि यहोवा हमारे संग होता, तो हम पर यह सब विपत्ति क्यों पड़ती?
¹⁴ तब यहोवा ने उस पर दृष्टि करके कहा, अपनी इसी शक्ति पर जा और तू इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा; क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा?
²³ यहोवा ने उस से कहा, तुझे शान्ति मिले; मत डर, तू न मरेगा।

4. न्यायियों 7 : 2-4 (से :), 5 (से :), 6 (से :), 7 (से :), 16, 20, 21

- ² तब यहोवा ने गिदोन से कहा, जो लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं कि मैं मिद्यानियों को उनके हाथ नहीं कर सकता, नहीं तो इस्राएल यह कहकर मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई मारने लगे, कि हम अपने ही भुजबल के द्वारा बचे हैं।
³ इसलिये तू जा कर लोगों में यह प्रचार करके सुना दे, कि जो कोई डर के मारे थरथराता हो, वह गिलाद पहाड़ से लौटकर चला जाए। तब बाईस हजार लोग लौट गए, और केवल दस हजार रह गए।
⁴ फिर यहोवा ने गिदोन से कहा, अब भी लोग अधिक हैं; उन्हें सोते के पास नीचे ले चल, वहां मैं उन्हें तेरे लिये परखूंगा
⁵ तब वह उन को सोते के पास नीचे ले गया
⁶ जिन्होंने मुंह में हाथ लगा चपड़ चपड़ करके पानी पिया उनकी तो गिनती तीन सौ ठहरी
⁷ तब यहोवा ने गिदोन से कहा, इन तीन सौ चपड़ चपड़ करके पीने वालों के द्वारा मैं तुम को छुड़ाऊंगा, और मिद्यानियों को तेरे हाथ में कर दूंगा

- ¹⁶ तब उसने उन तीन सौ पुरुषों के तीन झुण्ड किए, और एक एक पुरुष के हाथ में एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया, और घड़ों के भीतर एक मशाल थी।
- ²⁰ तब तीनों झुण्डों ने नरसिंगों को फूँका और घड़ों को तोड़ डाला; और अपने अपने बाएं हाथ में मशाल और दाहिने हाथ में फूँकने को नरसिंगा लिए हुए चिल्ला उठे, यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार।
- ²¹ तब वे छावनी के चारों ओर अपने अपने स्थान पर खड़े रहे, और सब सेना के लोग दौड़ने लगे; और उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर उन्हें भगा दिया।

5. न्यायियों 8 : 22, 23, 28

- ²² तब इस्राएल के पुरुषों ने गिदोन से कहा, तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता करे; क्योंकि तू ने हम को मिद्यान के हाथ से छुड़ाया है।
- ²³ गिदोन ने उन से कहा, मैं तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूँगा, और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता करेगा; यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा।
- ²⁸ इस प्रकार मिद्यान इस्राएलियों से दब गया, और फिर सिर न उठाया। और गिदोन के जीवन भर अर्थात् चालीस वर्ष तक देश चैन से रहा।

6. भजन संहिता 62 : 11, 12

- ¹¹ परमेश्वर ने एक बार कहा है; और दो बार मैं ने यह सुना है: कि सामर्थ्य परमेश्वर का है।
- ¹² और हे प्रभु, करूँगा भी तेरी है। क्योंकि तू एक एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है॥

7. यशायाह 60 : 1, 3, 4 (से 1st. :)

- ¹ उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
- ³ और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥
- ⁴ अपनी आंखें चारो ओर उठा कर देख

8. यशायाह 61 : 1-3

- ¹ प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूं।
- ² कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब विलाप करने वालों को शान्ति दूं

- ³ कि सिय्योन के विलाप करनेवालों के लिये राख दूर कर सुन्दरता, और विलाप दूर कर हर्ष का तेल और उनकी उदासी दूर कर स्तुति का वस्त्रा ओढ़ाऊं; जिस से वे धर्म के वृक्ष और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं, जिस से उसकी महिमा प्रगट हो।

9. यूहन्ना 8 : 31, 32, 36

- ³¹ तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चले ठहरोगे।
³² और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
³⁶ इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

10. गलातियों 5 : 1, 13

- ¹ मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर न जुतो॥
¹³ हे भाइयों, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।

11. 1 पतरस 2 : 1, 5, 16

- ¹ इसलिये सब प्रकार का बैर भाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को दूर करके
⁵ तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों।
¹⁶ और अपने आप को स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास समझ कर चलो।

12. भजन संहिता 46 : 11 (से 1st.)

- ¹¹ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊंचा गढ़ है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 224 : 28 (सच)-4

सत्य स्वतंत्रता के तत्व लाता है। इसके बैनर पर आत्मा से प्रेरित आदर्श वाक्य है, "दासता समाप्त हो गई है।" ईश्वर की शक्ति बंदी को मुक्ति दिलाती है। कोई भी शक्ति ईश्वरीय प्रेम का सामना नहीं कर सकती। यह कथित शक्ति क्या है, जो ईश्वर का विरोध करती है? यह कहाँ से आती है? वह क्या है जो मनुष्य को पाप, बीमारी और मृत्यु की लोहे की बेड़ियों से बांधती है? जो कुछ भी मनुष्य को गुलाम बनाता है वह ईश्वरीय सरकार का विरोध करता है। सत्य मनुष्य को स्वतंत्र बनाता है।

2. 106 : 6-14

हमारे राष्ट्र की तरह, क्रिश्चियन साइंस की भी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा है। ईश्वर ने मनुष्य को अविभाज्य अधिकार प्रदान किए हैं, जिनमें स्वशासन, तर्क और विवेक शामिल हैं। मनुष्य तभी उचित रूप से स्वशासित होता है जब वह अपने निर्माता, ईश्वरीय सत्य और प्रेम द्वारा सही तरीके से निर्देशित और शासित होता है।

जब ईश्वरीय आदेश में हस्तक्षेप किया जाता है, तो मनुष्य के अधिकारों पर आक्रमण होता है, और मानसिक अतिचारी को इस अपराध के कारण ईश्वरीय दंड भुगतना पड़ता है।

3. 227 : 7-20

ईश्वरीय मन के कानून को मानव बंधन को समाप्त करना चाहिए, अन्यथा नश्वर मनुष्य के अविभाज्य अधिकारों से अनभिज्ञ रहेंगे और निराशाजनक दासता के अधीन रहेंगे, क्योंकि कुछ सार्वजनिक शिक्षक ईश्वरीय शक्ति की अज्ञानता की अनुमति देते हैं, - एक अज्ञान जो निरंतर बंधन और मानव पीड़ा का आधार है।

मनुष्य के अधिकारों को समझते हुए, हम सभी उत्पीड़न के विनाश को देखने में विफल नहीं हो सकते। गुलामी मनुष्य की वैध स्थिति नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र बनाया। पॉल ने कहा, "मैं स्वतंत्र रूप से पैदा हुआ था।" सभी मनुष्यों को स्वतंत्र होना चाहिए। "जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है।" प्रेम और सत्य स्वतंत्र बनाते हैं, लेकिन बुराई और त्रुटि कैद में ले जाती है।

4. 368 : 10-19

इस घातक मान्यता के विरुद्ध कि त्रुटि सत्य जितनी ही वास्तविक है, कि बुराई शक्ति में भले ही अच्छी हो, लेकिन उससे बेहतर नहीं है, और कि कलह सद्भाव की तरह ही सामान्य है, बीमारी और पाप के बंधन से मुक्ति की आशा भी तंत्रिका प्रयास के लिए बहुत कम प्रेरणा देती है। जब हम त्रुटि की तुलना में अस्तित्व के सत्य पर अधिक विश्वास करते हैं, पदार्थ की तुलना में आत्मा पर अधिक विश्वास करते हैं, मरने की तुलना में जीने में अधिक विश्वास करते हैं, मनुष्य की तुलना में ईश्वर पर अधिक विश्वास करते हैं, तो कोई भी भौतिक धारणा हमें बीमारों को ठीक करने और त्रुटि को नष्ट करने से नहीं रोक सकती।

5. 380 : 32-7

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

पदार्थ या शरीर का हर नियम, जो मनुष्य को नियंत्रित करने वाला माना जाता है, जीवन के नियम, ईश्वर द्वारा निरर्थक और निरर्थक बना दिया जाता है। अपने ईश्वर-प्रदत्त अधिकारों से अनभिज्ञ होकर, हम अन्यायपूर्ण आदेशों के अधीन हो जाते हैं, और शिक्षा का पक्षपात इस गुलामी को लागू करता है। इस भ्रम को सहने के लिए तैयार न हों कि आप बीमार हैं या आपके सिस्टम में कोई बीमारी विकसित हो रही है, जैसे कि आप पाप के प्रलोभन के आगे इस आधार पर झुक जाते हैं कि पाप की अपनी ज़रूरतें हैं।

6. 256 : 19 (कौन)-23

वह कौन है जो हमारी आज्ञाकारिता की मांग करता है? वह जो, शास्त्र की भाषा में, "स्वर्ग की सेना में और पृथ्वी के निवासियों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई भी उसका हाथ नहीं रोक सकता, या उससे नहीं पूछ सकता, कि तू क्या कर रहा है?"

7. 205 : 32-13

जब हम ईश्वर के साथ अपने संबंध को पूरी तरह समझ लेते हैं, तो हमारे पास ईश्वर के अलावा कोई दूसरा मन नहीं रह जाता - कोई दूसरा प्रेम, ज्ञान या सत्य नहीं, जीवन की कोई दूसरी भावना नहीं, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं।

मानव इच्छा शक्ति का प्रयोग केवल सत्य के अधीन ही किया जाना चाहिए; अन्यथा यह निर्णय को गुमराह करेगा और निम्न प्रवृत्तियों को मुक्त करेगा। मनुष्य को नियंत्रित करना आध्यात्मिक भावना का कार्य है। भौतिक, गलत, मानवीय विचार शरीर पर और उसके माध्यम से हानिकारक रूप से कार्य करते हैं।

इच्छा शक्ति सभी बुराइयों में सक्षम है। यह कभी भी बीमार को ठीक नहीं कर सकती, क्योंकि यह अधर्मियों की प्रार्थना है; जबकि भावनाओं का प्रयोग - आशा, विश्वास, प्रेम - धर्मियों की प्रार्थना है।

8. 226 : 14-21

ईश्वर ने मानव अधिकारों का एक उच्च मंच बनाया है, और उसने इसे दिव्य दावों पर बनाया है। ये दावे कोड या पंथ के माध्यम से नहीं किए गए हैं, बल्कि "पृथ्वी पर शांति, मनुष्यों के प्रति सद्भावना" के प्रदर्शन में किए गए हैं। मानव संहिता, शैक्षणिक धर्मशास्त्र, भौतिक चिकित्सा और स्वच्छता, विश्वास और आध्यात्मिक समझ को बांधते हैं। दिव्य विज्ञान इन बंधनों को तोड़ देता है, और मनुष्य का अपने निर्माता के प्रति एकमात्र निष्ठा का जन्मसिद्ध अधिकार खुद को मुखर करता है।

9. 253 : 9-31

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

मुझे आशा है, प्रिय पाठक, मैं आपको आपके दिव्य अधिकारों, आपके स्वर्ग-प्रदत्त सामंजस्य की समझ में ले जा रहा हूँ - कि, जैसा कि आप पढ़ते हैं, आप देखते हैं कि कोई भी कारण (गलत, नश्वर, भौतिक भावना के अलावा जो शक्ति नहीं है) आपको बीमार या पापी बनाने में सक्षम नहीं है; और मुझे आशा है कि आप इस झूठी भावना पर विजय प्राप्त कर रहे हैं। तथाकथित भौतिक भावना की मिथ्याता को जानते हुए, आप पाप, बीमारी या मृत्यु में विश्वास को दूर करने के लिए अपने विशेषाधिकार का दावा कर सकते हैं।

यदि आप जानबूझकर गलत पर विश्वास करते हैं और उसका अभ्यास करते हैं, तो आप तुरंत अपना रास्ता बदल सकते हैं और सही कर सकते हैं। पदार्थ पाप या बीमारी के खिलाफ सही प्रयासों का कोई विरोध नहीं कर सकता, क्योंकि पदार्थ निष्क्रिय, नासमझ है। इसके अलावा, यदि आप खुद को बीमार मानते हैं, तो आप शरीर से बाधा के बिना इस गलत विश्वास और कार्य को बदल सकते हैं।

पाप, बीमारी या मृत्यु के लिए किसी भी कथित आवश्यकता पर विश्वास न करें, यह जानते हुए (जैसा कि आपको पता होना चाहिए) कि भगवान कभी भी तथाकथित भौतिक कानून का पालन करने की आवश्यकता नहीं रखते हैं, क्योंकि ऐसा कोई कानून मौजूद नहीं है। पाप और मृत्यु में विश्वास परमेश्वर के नियम द्वारा नष्ट हो जाता है, जो मृत्यु के स्थान पर जीवन का, मतभेद के स्थान पर सामंजस्य का, तथा शरीर के स्थान पर आत्मा का नियम है।

10. 225 : 8-22

इस दुनिया की ताकतें लड़ेंगी और अपने पहरेदारों को आदेश देंगी कि सत्य को तब तक न जाने दें जब तक वह उनकी व्यवस्थाओं का समर्थन न कर ले; लेकिन विज्ञान, नुकीली संगीन की परवाह न करते हुए, आगे बढ़ता रहता है। हमेशा कुछ न कुछ हंगामा होता रहता है, लेकिन सत्य के मानक पर लोग एकजुट होते हैं।

हमारे देश का इतिहास, सभी इतिहासों की तरह, मन की शक्ति को दर्शाता है और दिखाता है कि मानव शक्ति उसके सही सोच के अवतार के अनुपात में है। ईश्वरीय न्याय की सर्वशक्तिमत्ता को सांस देते हुए कुछ अमर वाक्य निरंकुश बेड़ियों को तोड़ने और कोड़े मारने की सजा और गुलाम बाजार को खत्म करने में शक्तिशाली रहे हैं; लेकिन न तो उत्पीड़न खून में डूबा, न ही तोप के मुंह से आजादी की सांस निकली। प्रेम मुक्तिदाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6